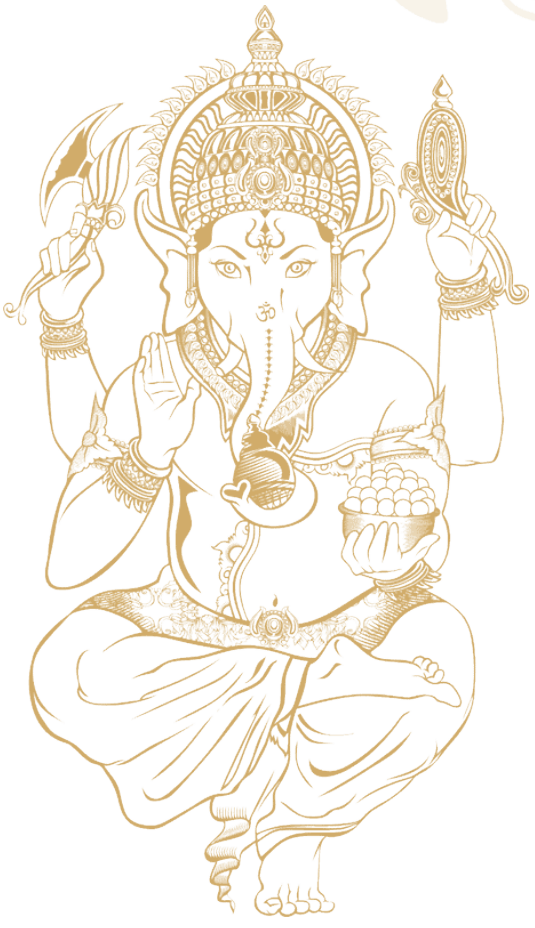

Liladhar

Bhagyashree

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121748714

पुल्लिंग :		लिंग	: स्त्रीलिंग
14/05/1999 :		जन्म तिथि	: 25-26/12/2000
शुक्रवार :		दिवस	: सोम–मंगळवार
कला 17:20:00 :		जन्म समय	: 04:02:00 कला
घटी 28:47:03 :		जन्म समय(घटी)	: 52:32:16 घटी
India :		देश	: India
Savda :		स्थान	: Savda
21:10:00 उत्तर :		अक्षांश	: 21:10:00 उत्तर
75:58:00 पूर्व :		रेखांश	: 75:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :		मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
कला -00:26:08 :		स्थानिक संस्कार	: -00:26:08 कला
कला 00:00:00 :		ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 कला
05:49:10 :		सूर्योदय	: 07:01:05
18:55:39 :		सूर्यास्त	: 17:51:43
23:50:40 :		लाहिरी अयनांश	: 23:51:58

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 17वर्ष 7मा 8दि		08:43:45	तुला	लग्न	तुला	29:42:21	केतु 0वर्ष 2मा 12दि	
चन्द्र		29:24:26	मेष	सूर्य	धनु	10:35:18	रवि	
22/12/2022		14:55:41	मेष	चंद्र	धनु	12:56:56	09/03/2021	
21/12/2032		03:28:25	तुला व	मंगळ	तुला	07:30:38	10/03/2027	
चन्द्र	22/10/2023	16:35:56	मेष	बुध	धनु	10:39:49	रवि	27/06/2021
मंगळ	22/05/2024	27:24:31	मीन	गुरु व	वृष	08:51:47	चन्द्र	27/12/2021
राहु	21/11/2025	12:35:07	मिथु	शुक्र	मक	26:20:08	मंगळ	03/05/2022
गुरु	23/03/2027	15:04:17	मेष	शनि व	वृष	01:00:57	राहु	28/03/2023
शनि	22/10/2028	23:06:43	कर्क व	राहु व	मिथु	21:35:56	गुरु	14/01/2024
बुध	23/03/2030	23:06:43	मक व	केतु व	धनु	21:35:56	शनि	26/12/2024
केतु	22/10/2030	22:55:33	मक	हर्ष	मक	24:29:55	बुध	02/11/2025
शुक्र	22/06/2032	10:30:31	मक व	नेप	मक	11:15:07	केतु	10/03/2026
रवि	21/12/2032	15:43:42	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	19:40:58	शुक्र	10/03/2027

लग्न–चलित

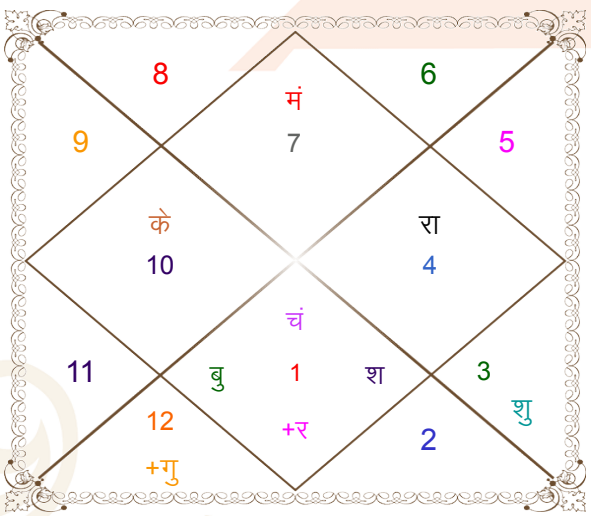

लग्न–चलित

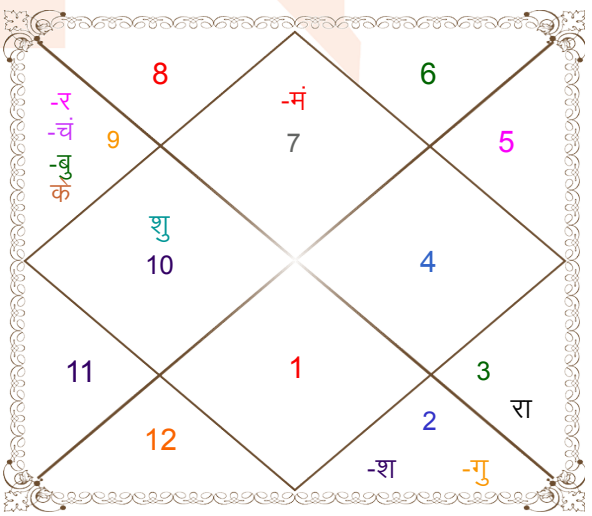

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	––	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	––	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	––	भाग्य
योनि	गज	श्वान	4	2.00	––	यौन विचार
मैत्री	मंगळ	गुरु	5	5.00	––	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	आह	सामाजिकता
भकूट	मेष	धनु	7	0.00	आह	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	––	स्वास्थ्य/संतान
एकुण :			**36**	**20.00**		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

स्पसंकींत का वर्ग मृग है तथा ठींहलौतमम का वर्ग उंदीर है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार स्पसंकींत और ठींहलौतमम का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

स्पसंकींत मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

ठींहलौतमम मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

स्पसंकींत तथा ठींहलौतमम में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।